कृष्णदास संस्कृत सीरीज
२६५
****

कृष्णद्वैपायनमहर्षिव्यासविरचितम्

ब्रह्मवैवर्तपुराण

मूल तथा भाषानुवाद

भाषाभाष्यकार
एस. एन. खण्डेलवाल
(श्री नाथ खण्डेलवाल)

प्रथम भाग

(ब्रह्मखण्ड, प्रकृतिखण्ड एवं गणपतिखण्ड)

चौखम्बा कृष्णदास अकादमी
वाराणसी

विषयानुक्रमणिका

अध्याय पृष्ठाङ्क

प्रथम ब्रह्मखण्ड

१. ब्रह्मवैवर्तपुराण कथारंभ, पुराण परिचय २
२. विभिन्न लोकों की स्थिति तथा परब्रह्मनिरूपण के अन्तर्गत् कृष्ण स्वरूप वर्णन १०
३. सृष्टि निरूपण, कृष्ण के शरीर से नारायण आदि का आविर्भाव, इन सबके द्वारा कृत श्रीकृष्ण की स्तुति का वर्णन १४
४. सावित्री प्रभृति का आविर्भाव, ब्रह्माण्डोत्पत्ति, महाविराट् के जन्म का वर्णन २६
५. कालसंख्यान, रासमण्डल में राधा की उत्पत्ति, राधा-कृष्ण के शरीर से गो-गोपी-गोपों का आविर्भाव, शिव प्रभृति देवगण को वाहन प्रदान करना, गुह्यक आदि की उत्पत्ति का वर्णन ३०
६. श्रीकृष्ण द्वारा शंकर को वर प्रदान, शिवनाम की व्युत्पत्ति, भगवान् कृष्ण द्वारा सृष्टि करने के लिये ब्रह्मा को प्रेरित करना ३९
७. ब्रह्मा द्वारा पृथिवी आदि के सृष्टिकार्य का वर्णन ४८
८. वेदादि शास्त्रों की उत्पत्ति, स्वायम्भुव मनु-मानस पुत्रों-पुलत्स्यादि ऋषिगण की उत्पत्ति, ब्रह्मा तथा नारद को शाप प्राप्ति ५१
९. कश्यपादि ऋषिगण की सृष्टि, पृथ्वी के गर्भ से मंगल का जन्म, कश्यप वंश वर्णन, चन्द्र को दक्ष प्रजापति द्वारा शाप दिया जाना, शिव के शरणागत चन्द्र को विष्णु का वरदान, सर्वान्त में दक्ष और चन्द्र का जाना ६०
१०. जाति निर्णय प्रस्ताव में घृताची एवं विश्वकर्मा का परस्पर एक-दूसरे को शाप देना तथा सम्बन्ध निरूपण का वर्णन ७३
११. अश्विनीकुमार की शापमुक्ति के प्रसंग में विष्णु, वैष्णवों तथा ब्राह्मणों की प्रशंसा ९४
१२. उपबर्हण गन्धर्व रूप से नारद का जन्म वृत्तान्त १००
१३. ब्रह्मशाप के कारण उपबर्हण का प्राण त्याग तथा मालावती का विलाप करना १०५
१४. विप्ररूपी विष्णु-मालावती संवाद ११६
१५. मालावती से कालपुरुष आदि का संवाद १२४
१६. चिकित्सा प्रकरण का वर्णन १३१
१७. ब्राह्मण रूपधारी विष्णु एवं देवताओं का परस्पर संवाद, विष्णु की प्रशंसा १४१
१८. मालावती द्वारा महापुरुष का स्तोत्र करना तथा उपबर्हण को पुनर्जीवन लाभ १५०
१९. ब्रह्माण्डपावन कवच तथा बाणासुर द्वारा शंकर का स्तव करना १५६
२०. उपबर्हण गन्धर्व का क्षुद्रयोनि में जन्म १६५

अध्याय	पृष्ठाङ्क
२१. नारद नाम की व्युत्पत्ति तथा नारद की शाप से मुक्ति	१७३
२२. नारदादि ब्रह्मपुत्रगण की नामनिरुक्ति का वर्णन	१७९
२३. ब्रह्मा-नारद संवाद	१८३
२४. पितामह द्वारा नारद को मन्त्र प्राप्ति हेतु शिवलोक जाने का निर्देश दिया जाना	१८९
२५. शिव तथा नारद का समागम	१९४
२६. नारद के प्रति महादेव द्वारा कृष्णमन्त्र प्रदान का वर्णन तथा आह्निक प्रकरण कथन	१९७
२७. भक्ष्य-अभक्ष्य का निर्णय	२०९
२८. ब्रह्मनिरूपण, नारद को शिव से वर लाभ, शिवाज्ञा से नारद का नारायण ऋषि आश्रम जाना	२१४
२९. नारायण के प्रति नारद का प्रश्न	२२२
३०. भगवत् स्वरूप वर्णन	२२४

द्वितीय प्रकृतिखण्ड

१. प्रकृति-चरित का संक्षिप्त विवरण	२२८
२. शक्ति प्रभृति शब्द की व्युत्पत्ति, ब्रह्माण्ड आदि की उत्पत्ति तथा देवदेवियों की उत्पत्ति का कथन	२४६
३. विश्वनिर्णय कथन	२५७
४. सरस्वती की पूजाविधि-ध्यान-कवचादि वर्णन	२६४
५. याज्ञवल्क्य कृत सरस्वती स्तव	२७४
६. सरस्वती, लक्ष्मी तथा गंगा के बीच परस्पर विवाद, शाप तथा परस्परतः नदीरूपत्व प्राप्त होना	२७९
७. काल, कलि तथा ईश्वर के गुणों का निरूपण	२९४
८. पृथिवी की उत्पत्ति, पृथिवी पूजाविधि, ध्यान तथा स्तोत्र आदि का वर्णन	३०८
९. पृथिवी का उपाख्यान वर्णन तथा भूमिदान के फल का कथन	३१५
१०. गंगा का उपाख्यान, भगीरथ द्वारा गंगा को लाना, गंगा स्तव तथा गंगा पूजा आदि का वर्णन	३१९
११. गंगा के विष्णुपदी नाम की व्युत्पत्ति का वर्णन, राधिका द्वारा कृष्ण का तिरस्कार, राधा द्वारा गंगा को पी जाने के भय से गंगा द्वारा कृष्ण के चरण में शरण ग्रहण करना तथा ब्रह्मा आदि देवगण की प्रार्थना द्वारा गंगा का कृष्ण के चरणों से निकलना	३४०
१२. गंगा के साथ नारायण का विवाह	३५६
१३. तुलसी उपाख्यान, वृषध्वज का चरित्र वर्णन	३६०
१४. वेदवती उपाख्यान का वर्णन तथा संक्षेप में रामायण वर्णन	३६६

अध्याय	पृष्ठाङ्क
१५. तुलसी का जन्म, बदरिकाश्रम में उनकी तपस्या, ब्रह्मा से वर प्राप्ति का वर्णन	३७४
१६. तुलसी आश्रम में शंखचूड़ का आगमन, दोनों का विवाह, देवगण का वैकुण्ठ जाकर विष्णु से शंखचूड़ के उपद्रवों का वर्णन, शंखचूड़ वधार्थ विष्णु से शंकर द्वारा शूल पाना	३८०
१७. महादेव द्वारा शंखचूड़ के यहां युद्ध का संवाद देने दूत भेजना, तुलसी के साथ शंखचूड़ के विलास का वर्णन	४०३
१८. शंखचूड़ की युद्ध यात्रा, शिव-शंखचूड़ का परस्पर संवाद	४१२
१९. उभय सेना के बीच द्वैरथ युद्ध, कार्त्तिकेय की पराजय, काली से शंखचूड़ का युद्ध	४२२
२०. विष्णु द्वारा वृद्ध ब्राह्मण के वेश में शंखचूड़ का कवच लेना, महादेव द्वारा शंखचूड़ के साथ युद्ध करना तथा उसका वध करना, शंखचूड़ के कंकाल से शंखोत्पत्ति	४३०
२१. तुलसी का पातिव्रत्य भंग तथा शालिग्राम के लक्षण एवं महत्त्व	४३४
२२. तुलसी नामाष्टक तथा पूजाविधि	४४५
२३. अश्वपति को पराशर का उपदेश, सावित्री का ध्यान, उनके पूजा विधान का कथन तथा ब्रह्माकृत सावित्री स्तोत्र कथन	४५१
२४. सावित्री जन्म, सावित्री-सत्यवान् का विवाह, सत्यवान की मृत्यु, यम-सावित्री संवाद	४६०
२५. यम-सावित्री संवाद, कर्म विवेचना	४६५
२६. शुभ कर्मविपाक का वर्णन, यम से सावित्री को वरलाभ होना	४६९
२७. सावित्री-यम संवाद, विविध दान निरूपण, शुभकर्म फल वर्णन	४७७
२८. सावित्री कृत यम स्तव	४९२
२९. यम द्वारा नरककुण्डों का वर्णन	४९४
३०. पाप के अनुसार मिलने वाले तत्तद् नरकों का वर्णन	४९७
३१. पापियों के भेद से नरकभेद का वर्णन	५२२
३२. श्रीकृष्ण सेवा से कर्मों का उच्छेदन, भोगदेह (लिंगदेह) का वर्णन	५३०
३३. नरककुण्डों का लक्षण वर्णन	५३४
३४. श्रीकृष्ण के माहात्म्य का वर्णन, सत्यवान को जीवनदान तथा सावित्री शब्द की व्युत्पत्ति का कथन	५४६
३५. लक्ष्मी का स्वरूप वर्णन, पूजनादि विधि का वर्णन	५५७
३६. इन्द्र को दुर्वासा का शाप, श्रीभ्रष्ट इन्द्र को दुर्वासा से ज्ञान एवं वर प्राप्ति	५६१
३७. इन्द्र का बृहस्पति के पास जाना, इन्द्र को बृहस्पति द्वारा प्रबोध प्रदान किया जाना	५८२
३८. देवगुरु तथा देवगण के साथ इन्द्र का ब्रह्मलोक जाना, वहां से ब्रह्मा के साथ सभी देवताओं का वैकुण्ठ गमन, नारायण द्वारा लक्ष्मी का निवास स्थान वर्णन, उनके आदेशानुसार समुद्र मन्थन और देवगण को पुनः लक्ष्मी प्राप्ति	५८६

अध्याय	पृष्ठाङ्क
३९. इन्द्र द्वारा लक्ष्मीपूजा करने में महालक्ष्मी का मन्त्र, ध्यान, पूजाविधि तथा स्तवों का कथन	५९४
४०. स्वाहा का उपाख्यान वर्णन	६०४
४१. स्वधा की उत्पत्ति आदि का वर्णन	६११
४२. दक्षिणा का उपाख्यान यज्ञकृत दक्षिणा स्तोत्र का कथन	६१७
४३. षष्ठी देवी का उपाख्यान, प्रियव्रत राजा द्वारा कृत षष्ठी पूजा एवं स्तोत्रादि का वर्णन	६२८
४४. मंगल चण्डी उपाख्यान तथा उनकी पूजा विधि-ध्यान, मन्त्र तथा स्तोत्र का वर्णन	६३७
४५. मनसा का उपाख्यान, मनसा के बारह नामों की व्युत्पत्ति	६४१
४६. जरत्कारु मुनि के साथ मनसा का विवाह, आस्तीक जन्म, जनमेजय के नागयज्ञ में आस्तीक द्वारा नागकुल की रक्षा, महेन्द्र कृत मनसा के स्तोत्र आदि का वर्णन	६४४
४७. सुरभि का उपाख्यान एवं स्तव	६६२
४८. राधा के उपाख्यान का वर्णन, महादेव का पार्वती से 'राधा' शब्द की व्युत्पत्ति का कथन	६६५
४९. श्रीकृष्ण के साथ विरजा गोपी का विहार, राधा के भय से कृष्ण का अन्तर्ध्यान होना, विरजा को नदी रूप मिलना, राधा-सुदामा के बीच विवाद, उनका एक-दूसरे को शाप देना	६७२
५०. सुयज्ञ का उपाख्यान, सुयज्ञ को ब्राह्मण का शाप	६८०
५१. अतिथि ब्राह्मण के प्रति विनय प्रदर्शन के बहाने ऋषियों का राजा को उपदेश देना	६८४
५२. कर्मफल कथन	६९५
५३. अतिथि का उपदेश	७००
५४. श्रीकृष्ण स्वरूप वर्णन प्रसंग में कालमान कथन, विप्रचरणा-मृत की प्रशंसा, तप द्वारा राजा सुयज्ञ द्वारा राधा-कृष्ण दर्शन लाभ होना	७०६
५५. राधा की पूजाविधि तथा श्रीकृष्ण द्वारा स्तुत राधिका स्तव	७२५
५६. राधा के मन्त्र आदि का निरूपण	७३७
५७. दुर्गा उपाख्यान, दुर्गा के सोलह नामों की व्युत्पत्ति	७४४
५८. सुरथ के वंश का वर्णन, तारा हरण वृत्तान्त वर्णन, शुक्राचार्य द्वारा चन्द्रमा का पापनाश	७५०
५९. युद्धार्थ सन्नद्ध देवगण का नर्मदा तट पर एकत्र होना तथा बृहस्पति का कैलास जाना	७६२
६०. शिव तथा बृहस्पति का वार्त्तालाप, नर्मदा तट पर जाना, विष्णु के दूत बन कर ब्रह्मा का शुक्राचार्य के पास गमन	७७२
६१. शुक्र द्वारा ब्रह्मा को तारा का समर्पण, बुध जन्म, बृहस्पति को तारा की प्राप्ति, सुरथ तथा समाधि वैश्य का वंश परिचय	७८४
६२. सुरथ का मेधस मुनि से संवाद	७९६
६३. समाधि वैश्य द्वारा प्रकृति देवी का साक्षात्कार, दुर्गा-वैश्य संवाद तथा मुक्तिलाभ	८०१
६४. राजा सुरथ कृत प्रकृति (दुर्गा) देवी की पूजा का क्रम वर्णन	८०६

अध्याय पृष्ठाङ्क
६५. प्रकृति पूजा का फल तथा काल निरूपण ८१७
६६. भगवती दुर्गा के स्तोत्र तथा कवच का वर्णन ८२२
६७. ब्रह्माण्ड मोहन कवच वर्णन ८२६

तृतीय गणपतिखण्ड

१. पार्वती जन्म, हर-पार्वती का संभोग-भंग, कार्तिकेय का जन्म ८३०
२. शंकर से पार्वती का खेद प्रकट करना तथा उनके द्वारा देवगण को शाप देना ८३५
३. पार्वती को महादेव द्वारा पुण्यक व्रत का उपदेश तथा गंगा तट पर हरिमन्त्रदान ८३९
४. पुण्यक व्रत विधान का वर्णन ८४३
५. पुण्यक व्रत कथा वर्णन तथा माहात्म्य ८५२
६. व्रत महोत्सव, व्रताज्ञा लेना ८५५
७. व्रतानुष्ठान, श्रीकृष्ण की आज्ञा से पार्वती द्वारा पति को ही दक्षिणारूपेण सनत्कुमार को देना, पुनः पतिलाभार्थ पार्वतीकृत श्रीकृष्ण स्तव ८६७
८. श्रीकृष्ण द्वारा पार्वती को वर प्राप्ति, सनत्कुमार से पार्वती को पति प्राप्ति तथा गणेश जन्म ८८४
९. हर-पार्वती द्वारा बालक गणेश को देखना ८९४
१०. गणेश के मंगल हेतु मंगलाचरण, गणेश जन्मोत्सव ८९८
११. शनैश्चर के साथ पार्वती देवी का वार्त्तालाप ९०३
१२. शनि की दृष्टि पड़ते ही गणेश का शिर गिरना, पुनः शिव द्वारा शिरयुक्त करना ९०८
१३. गणेश का नामकरण, उनका कवच वर्णन, गणेश पूजा तथा स्तुति वर्णन ९१५
१४. कार्त्तिकेय के जन्म का वर्णन ९२५
१५. कार्त्तिकेय को लेने आने के लिये नन्दी आदि शिवदूतों का कृत्तिकाओं के स्थान पर जाना, नन्दी-कार्त्तिक संवाद का वर्णन ९३०
१६. कार्त्तिकेय का कैलास धाम में आगमन ९३६
१७. कार्त्तिकेय का अभिषेक, कार्त्तिक तथा गणेश विवाह का वर्णन ९४२
१८. गणेश के मस्तक रहित होने का कारण कहे जाने के साथ शंकर को कश्यप शाप प्रसंग का वर्णन ९४५
१९. सूर्यदेव का स्तव-कवच ९४७
२०. गणेश के गजानन होने का कारण ९५३
२१. इन्द्र को पुनः लक्ष्मीलाभ ९६१
२२. हरि से इन्द्र को महालक्ष्मी स्तव-कवचादि की प्राप्ति ९६४
२३. लक्ष्मी-ब्राह्मण विरोधात्मक लक्ष्मी चरित्र वर्णन ९६९

अध्याय	पृष्ठाङ्क
२४. जमदग्नि कार्त्तवीर्य युद्ध तथा गणेश के एकदन्त होने का वर्णन	९७४
२५. कामधेनु से प्रादुर्भूत सैन्य द्वारा कार्त्तवीर्य की पराजय	९८२
२६. जमदग्नि तथा कार्त्तवीर्य के बीच का युद्ध तथा ब्रह्मा द्वारा युद्ध शान्त करना	९८५
२७. कार्त्तवीर्य से युद्ध करते हुए जमदग्नि का प्राणान्त तथा इस सम्बन्ध में परशुराम की प्रतिज्ञा	९८८
२८. भृगु-रेणुका संवाद, परशुराम का ब्रह्मलोक जाना, ब्रह्मा के साथ परशुराम की वार्त्ता	९९६
२९. ब्रह्मा से वर पाकर परशुराम का शिवलोक गमन तथा वहां शिवस्तोत्र पाठ करना	१००५
३०. शंकर-परशुराम संवाद का वर्णन	१०१२
३१. भार्गव (परशुराम) को शंकर द्वारा त्रैलोक्यविजय कवच देना	१०१६
३२. शंकर द्वारा परशुराम को भगवान् का मन्त्र तथा स्तोत्र प्रदान करना	१०२२
३३. परशुराम की युद्ध यात्रा, स्वप्न में शुभ-शकुनादि दृश्य देखना	१०३१
३४. कार्त्तवीर्य के यहां परशुराम द्वारा दूत भेजना, कार्त्तवीर्य का अपनी पत्नी मनोरमा से अपने द्वारा देखे गये स्वप्न वृत्तान्त का कथन	१०३८
३५. मनोरमा की मृत्यु, परशुराम कार्त्तवीर्य संवाद, भृगुकृत काली-स्तव वर्णन, ब्रह्मा भार्गव संवाद, सुचन्द्र वध वर्णन	१०४६
३६. मनोरमा को परलोक लाभ, भार्गव से कार्त्तवीर्य का संवाद, मत्स्यराज तथा परशुराम का युद्ध वर्णन प्रसंग एवं शिवकवच कथन	१०६१
३७. भद्रकाली कवच वर्णन	१०६६
३८. पुष्कराक्ष के साथ परशुराम युद्ध का तथा महालक्ष्मी कवच का वर्णन	१०७०
३९. दुर्गा कवच का वर्णन	१०७९
४०. कार्त्तवीर्य-परशुराम युद्ध, महादेव द्वारा कार्त्तवीर्य से छलपूर्वक कवचग्रहण, कार्त्तवीर्य का परलोकगमन, राजा तथा परशुराम संवाद, ब्रह्मा-परशुराम संवाद	१०८२
४१. परशुराम का कैलास गमन	१०९४
४२. गणेश तथा भार्गव का संवाद वर्णन	१०९७
४३. परशुराम-गणेश युद्ध, युद्ध में गणेश का एक दांत भग्न होना	११०५
४४. पार्वती द्वारा परशुराम की भर्त्सना किया जाना, विष्णु द्वारा परशुराम को उपदेश तथा गणेश स्तोत्र का वर्णन	१११०
४५. परशुराम कृत दुर्गा स्तोत्र का वर्णन	११२१
४६ परशुराम द्वारा तुलसी रहित गणेश पूजा करने पर तुलसी तथा परशुराम द्वारा एक-दूसरे को शाप देना	११३०

❖❖❖

कृष्णदास संस्कृत सीरीज
२६५
****

कृष्णद्वैपायनमहर्षिव्यासविरचितम्

ब्रह्मवैवर्तपुराण

मूल तथा भाषानुवाद

भाषाभाष्यकार
एस. एन. खण्डेलवाल
(श्री नाथ खण्डेलवाल)

द्वितीय भाग
(श्रीकृष्णजन्मखण्ड)

चौखम्बा कृष्णदास अकादमी
वाराणसी

विषयानुक्रमणिका

अध्याय पृष्ठाङ्क

चतुर्थ श्रीकृष्णजन्मखण्ड

१. देवर्षि नारद का नारायण ऋषि से कृष्ण सम्बन्धित प्रश्न करना, ऋषि द्वारा हरिकथा प्रसंग में विष्णु एवं वैष्णवों के गुण का वर्णन १
२. श्रीकृष्ण का विरजा के साथ विहार, राधिका के भय से कृष्ण का अन्तर्ध्यान होना तथा विरजा को नदीरूप की प्राप्ति का वर्णन ९
३. राधा का कृष्ण को शाप देना, राधा तथा श्रीदामा का एक-दूसरे को शाप प्रदान करना १६
४. अपना भार उतरवाने हेतु पृथिवी का ब्रह्मलोक जाना, ब्रह्मा से इस सम्बन्ध में निवेदन करना तथा गोलोक का वर्णन ३०
५. श्रीकृष्ण का स्तवराज ४९
६. महातेजमण्डल में देवगण द्वारा राधाकृष्ण दर्शन ६२
७. श्रीकृष्णजन्म का प्रसंग वर्णन ९४
८. जन्माष्टमी व्रतोपासना का फल वर्णन १०८
९. नन्द के पुत्रजन्मोत्सव का वर्णन ११८
१०. पूतना के मोक्ष का वर्णन १२७
११. तृणावर्त्त वध का वर्णन तथा राजा सहस्राक्ष का उपाख्यान १३२
१२. शकटासुर-भंजन का वर्णन १३६
१३. शिशु कृष्ण का अन्नप्राशन तथा नामकरण संस्कार वर्णन १४१
१४. वृक्षयोनि से यमलार्जुन का उद्धार १६९
१५. राधा-कृष्ण विवाह का वर्णन १७५
१६. बक, केशी तथा प्रलम्बासुर का वध, वसुदेवादि गन्धर्वों का शङ्कर शापोपलम्भन एवं कृष्ण का वृन्दावन जाने का प्रस्ताव १९६
१७. वृन्दावन निर्माण, कलावती के साथ वृकभानु का विवाह, वृन्दावन नाम का कारण कथन, राधा आदि १६ नामों की व्युत्पत्ति, भगवान् कृत राधास्तोत्र का वर्णन २१५
१८. विप्रपत्नी मोक्षण, विप्रपत्नीकृत श्रीकृष्णस्तोत्र, अग्नि के सर्वभक्षकत्व के कारण का कथन २४५
१९. कालियनाग दमन, कालियकृत श्रीकृष्ण स्तव, दावाग्नि मोक्षण, गोप-गोपीकृत कृष्ण-स्तोत्र का वर्णन २६०
२०. ब्रह्मा द्वारा गोवत्स आदि का हरण करना तथा ब्रह्माकृत श्रीकृष्ण स्तोत्र २८२

अध्याय **पृष्ठाङ्क**

२१. इन्द्रयागभंजन, नन्दकृत इन्द्रस्तोत्र, श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्द्धन धारण, इन्द्रकृत गोविन्द का स्तोत्र २८९
२२. कृष्ण द्वारा धेनुक वध का वर्णन, धेनुक द्वारा कहे गये कृष्ण स्तोत्र वर्णन ३१५
२३. प्रसङ्गक्रम से तिलोत्तमा तथा बलिपुत्र का दुर्वासा के शाप का वर्णन ३२६
२४. महर्षि दुर्वासा का विवाह तथा पत्नी वियोग ३४४
२५. और्व मुनि के शाप से दुर्वासा का पराजित होना, दुर्वासाकृत श्रीकृष्ण स्तवगान, दुर्वासा की सुदर्शन चक्र से मुक्ति ३५५
२६. एकादशी व्रत वर्णन ३७३
२७. गोपकन्याकृत श्रीकृष्णस्तोत्र, गोपीगण का चीरहरण, राधिकाकृत श्रीकृष्ण स्तव, गौरीव्रतविधि, व्रतकथा पार्वती स्तोत्र तथा व्रतपूर्ण होने पर पार्वती द्वारा वर देना ३८३
२८. रासलीला का वर्णन ४११
२९. अष्टावक्र का मोक्ष तथा अष्टावक्र कृत श्रीकृष्ण स्तोत्र ४३०
३०. राधिका से श्रीकृष्ण द्वारा अष्टावक्र उपाख्यान के अन्तर्गत् ऋषि असितकृत श्रीकृष्ण स्तोत्र का कथन, रम्भा अप्सरा के शाप से देवल ऋषि को अष्टावक्रत्व की प्राप्ति ४३६
३१. ब्रह्मा के पास मोहिनी का जाना, मोहिनी कृत कामस्तोत्र ४४८
३२. ब्रह्मा तथा मोहिनी का पारस्परिक संवाद, ब्रह्माकृत श्रीकृष्ण स्तोत्र वर्णन ४५७
३३. ब्रह्मा को मोहिनी का शाप तथा ब्रह्मा का गर्व भङ्ग ४६७
३४. गङ्गा के जन्म का वृत्तान्त, भागीरथी आदि गंगा नाम की व्युत्पत्ति, गंगा माहात्म्य वर्णन ४७६
३५. गङ्गा-स्नान द्वारा ब्रह्मा की शापमुक्ति, भारती से ब्रह्मा का संभोग, रति-काम का जन्म, कामबाण से ब्रह्मा का चित्तविकार और नारायण एवं ऋषियों द्वारा ब्रह्मा को उपदेश देना ४८१
३६. शिव का दर्प भङ्ग तथा उनके ऐश्वर्य का वर्णन, श्रीकृष्ण द्वारा शिव की प्रशंसा ४९३
३७. पार्वती के शाप के कारण शिव नैवेद्य अग्राह्य होना, शिव द्वारा कृत पार्वती स्तोत्र का वर्णन ५०६
३८. दुर्गादर्पभङ्ग प्रसङ्ग के अन्तर्गत् दर्पनाशार्थ सती का प्राणत्याग, पार्वतीरूपेण उनका जन्म तथा शिव-गिरि समागम वर्णन ५१२
३९. पार्वती का गर्व भङ्ग, हिमवान् तथा पार्वती द्वारा शिव का दर्शन, मदन के भस्म होने का वर्णन ५२०
४०. पार्वती की तपस्या, विप्र बालक वेष में शङ्कर का वहां आगमन, दोनों का वार्त्तालाप, पितृगृह में स्थित पार्वती के पास भिक्षुक वेश में महेश्वर का आना तथा गुरु- बृहस्पति के साथ देवगण की मन्त्रणा ५२८

अध्याय पृष्ठाङ्क

४१. हिमालय से ब्राह्मणरूपी महादेव द्वारा अपनी ही निन्दा किया जाना, गिरिजा के पास सप्तर्षिगण तथा अरुन्धती का आगमन, वसिष्ठ द्वारा कन्यादान सम्बन्धित कथा प्रसंग में अनरण्य राजा का उपाख्यान वर्णन करना ५४६
४२. वसिष्ठ द्वारा पद्मा तथा धर्म के बीच के संवाद का वर्णन, देवी सती का देहत्याग कथन ५६३
४३. शङ्कर का विरह तथा उनके शोक को दूर करने का वर्णन ५७४
४४. महादेव का विवाह-यात्रा तथा हिमालय कृत शिवस्तोत्र का वर्णन ५८६
४५. शिव-पार्वती के विवाह का वर्णन ५९३
४६. हर-गौरी के विलास का वर्णन तथा सर्वमङ्गल कथन ६०४
४७. इन्द्र के दर्प का भंग ६११
४८. सूर्य के दर्पभंग का वर्णन ६३०
४९. अग्निदेव के दर्प का भंग ६३२
५०. महर्षि दुर्वासा का दर्पभंग वर्णन ६३५
५१. धन्वन्तरि के दर्पभंग का कथन ६३८
५२. राधा का खेद, पहले राधा कहकर तब कृष्ण अर्थात् राधा-कृष्ण कहने का रहस्य ६४६
५३. राधा कृष्ण का विहार ६५०
५४. राधा-कृष्ण संवाद, संक्षेप में कृष्ण-चरित वर्णन ६५६
५५. श्रीकृष्ण की महिमा तथा प्रभाव का वर्णन ६५९
५६. महाविष्णु प्रभृति के दर्पभंग का वृत्तान्त तथा देवताओं द्वारा कृत लक्ष्मीस्तोत्र का वर्णन ६६३
५७. प्राणत्यागोद्यता मानिनी लक्ष्मी का वैराग्य त्याग्य ६७२
५८. संक्षेप में पृथिवी, सावित्री, गंगा, मनसा तथा राधा के दर्प का हरण ६७७
५९. विस्तार पूर्वक इन्द्र दर्पभंग वर्णन तथा इन्द्राणी कृत गुरु स्तवद्ध इन्द्राणी नहुष संवाद वर्णन ६७९
६०. बृहस्पति-दूत का संवाद, राजा नहुष को सर्पत्व प्राप्ति, इन्द्र की ब्रह्महत्या से मुक्ति ६९९
६१. बलि द्वारा इन्द्रदर्प भंजन, इन्द्र-अहल्या संवाद, इन्द्र द्वारा अहल्या से समागम, इन्द्र तथा अहल्या को गौतम का शाप मिलना ७०६
६२. संक्षेप में रामायण का वर्णन ७१३
६३. कंस द्वारा दुःस्वप्नदर्शन ७२४
६४. कंसकृत यज्ञ का वर्णन ७२८
६५. अक्रूर को परम हर्ष लाभ ७३४
६६. राधा के शोक का निवारण होना ७३८

अध्याय पृष्ठाङ्क
६७. राधा से कृष्ण का आध्यात्मिक योग वर्णन ७४१
६८. विरह से दुःखी राधा की कृष्ण से प्रार्थना तथा कृष्ण का राधा को उपदेश प्रदान करना ७५१
६९. विरहातुर राधा की कृष्ण से प्रार्थना, कृष्ण द्वारा राधा को उपदेश प्रदान करना, ब्रह्मा-श्रीकृष्ण संवाद, श्रीकृष्ण-रत्नमाला का पारस्परिक संवाद वर्णन ७५५
७०. अक्रूर का स्वप्न देखना, अक्रूर कृत श्रीकृष्ण स्तोत्र वर्णन, गोपीगण के साथ अक्रूर का विवाद, कृष्ण का प्रस्थान ७६६
७१. श्रीकृष्ण की मथुरायात्राकाल में मङ्गलाचरण ७७६
७२. श्रीकृष्ण का मथुरापुरी में प्रवेश, पुरी दर्शन, रजक निग्रह, कुब्जा पर कृपा, कंस का वध तथा वसुदेव-देवकी का बन्धन-मोक्ष ७७८
७३. श्रीकृष्ण द्वारा नन्द आदि का दुःख मोचन करना ७९१
७४. भगवान् श्रीकृष्ण तथा नन्द का संवाद, भगवान् द्वारा कर्मबन्धन काटने का उपदेश ८०१
७५. भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा नन्द को जागतिक ज्ञानोपदेश ८०४
७६. शुभ दर्शनों के पुण्य का वर्णन तथा दानफल वर्णन ८१६
७७. सुस्वप्न का फलकथन ८२६
७८. श्रीकृष्ण द्वारा आध्यात्मिक उपदेश तथा अशुभ जनित पाप का कथन ८३५
७९. राहुग्रस्त सूर्य क्यों न देखें, इसका वर्णन ८४२
८०. चन्द्रग्रहण कारण प्रसंग तथा चन्द्र को गुरुपत्नी तारा का शाप ८५०
८१. तारा के उद्धार का वर्णन ८५४
८२. दुःस्वप्नों का वर्णन तथा उनकी शान्ति करने का उपाय ८६१
८३. चातुर्वर्ण का धर्म निरूपण, संन्यासी तथा विधवा के वर्ण का वर्णन ८६८
८४. गृहस्थधर्म निरूपण, स्त्री चरित्र कथन, चारों वर्णों के भक्त-लक्षण तथा संक्षेप में कर्मपरिणाम तथा ब्रह्माण्ड वर्णन ८८५
८५. चातुर्वर्ण हेतु भक्ष्य-अभ्यक्ष्य वस्तु का वर्णन एवं कर्म विपाक कथन ९००
८६. केदारकन्या का वर्णन, ब्राह्मणरूपी धर्म को लक्ष्मी का अभिशाप तथा देवगण के अनुरोध से धर्म को शापमुक्त किया जाना ९२४
८७. भगवान् के यहां पुलह आदि ऋषिगण का आना, उनके साथ वार्त्तालाप, प्रभु तथा नन्द का संवाद, सनत्कुमार-मुनि संवाद वर्णन ९४२
८८. नन्दराज को कृष्ण द्वारा प्रकृति स्तव (दुर्गा स्तोत्र) की प्राप्ति का वर्णन ९५२

अध्याय	पृष्ठाङ्क
८९. नन्दराज से भगवान् श्रीकृष्ण का वार्त्तालाप, नन्द से ब्रज वापस जाने हेतु प्रार्थना करना तथा नन्द को श्रीकृष्ण द्वार वरदान देना	९६०
९०. चतुर्युग निरूपण	९६३
९१. नन्द तथा श्रीकृष्ण से देवकी तथा वसुदेव का कथनोपकथन	९७२
९२. भगवान् द्वारा भेजे गये उद्धव का वृन्दावन जाना, उनके द्वारा वृन्दावन दर्शन, उद्धवकृत राधिका-स्तोत्र का वर्णन	९७४
९३. राधा एवं उद्धव का वार्त्तालाप	९८३
९४. राधा की सखियों की कृष्ण के सम्बन्ध में अनेक उक्ति, उद्धव-माधवी संवाद, कलावती द्वारा सनत्कुमार शाप का वर्णन	९९४
९५. राधिका का खेद तथा उद्धव को मथुरागमन की आज्ञा देना	१००९
९६. उद्धव को राधा द्वारा उपदेश देना, कालगति का वर्णन	१०१३
९७. राधा तथा उद्धव का संवाद	१०२४
९८. उद्धव का मथुरा आगमन तथा भगवान् से वृन्दावन का वृत्तान्त कथन	१०३१
९९. वसुदेव के यहां गर्गमुनि का आगमन, राम-कृष्ण के यज्ञोपवीत संस्कार का प्रस्ताव, वहां अन्य ऋषियों का आगमन, वसुदेव द्वारा प्रकृति के वृत्तान्त का कथन	१०३७
१००. देवीगण का वसुदेव के यहां आगमन, अदिति आदि द्वारा पार्वती का सत्कार	१०४२
१०१. बलराम-कृष्ण का उपनयन संस्कार सम्पन्न होना, इस अवसर पर समागत देवगण तथा मुनियों आदि का स्वस्थान गमन वर्णन	१०४७
१०२. बलदेव तथा श्रीकृष्ण का सान्दीपनि आश्रम में विद्याभ्यास सम्पन्न करना, मुनिपत्नीकृत श्रीकृष्णस्तव, बलदेव तथा श्रीकृष्ण द्वारा गुरु को दक्षिणा देना	१०५१
१०३. श्रीकृष्ण द्वारा विश्वकर्मा से द्वारका निर्माण का आदेश प्रदान करना तथा इसी के अन्तर्गत् शुभाशुभ निर्माणादि का उपदेश विश्वकर्मा को देने का वर्णन	१०५५
१०४. ब्रह्मा आदि देवताओं तथा सनत्कुमार आदि ऋषियों का श्रीकृष्ण के यहां आना, श्रीकृष्ण का द्वारका में प्रवेश, उनका उग्रसेन आदि के साथ वार्त्तालाप	१०६३
१०५. रुक्मिणी के विवाह प्रसंग में भीष्मक राजा से शतानन्द द्वारा जो कहा गया था, उसे सुनकर रुक्मी का रुष्ट होकर वार्त्ता करना	१०७३
१०६. रेवती-बलराम विवाह वर्णन	१०८२
१०७. बलराम से रुक्मी आदि की पराजय, श्रीकृष्ण का अधिवासन, विवाह-प्रांगण में आगमन, भीष्मक का श्रीकृष्ण स्तोत्र, शाल्व आदि का मर्दन	१०८५

अध्याय पृष्ठाङ्क

१०८. राजा भीष्मक द्वारा श्रीकृष्ण को रुक्मिणी अर्पित करना १०९६

१०९. श्रीकृष्ण के साथ अरुन्धती आदि का कथनोपकथन, बारातियों के साथ वर-वधु का द्वारका प्रवेश १०९७

११०. नन्द तथा यशोदा का कदलीवन जाना तथा राधा एवं यशोदा का वार्त्तालाप आरम्भ ११०३

१११. राधा द्वारा यशोदा को भक्तिज्ञान का उपदेश तथा इसी प्रसंग में रामादि के नाम तथा कृष्णनाम की व्युत्पत्ति का कथन ११०८

११२. रुक्मिणी के गर्भ से कामदेव (प्रद्युम्न) का जन्म, शम्बर वध के पश्चात् रति तथा काम का द्वारका आना, श्रीकृष्ण की १६००० रानियों के पुत्रों की संख्या, दुर्वासा को श्रीकृष्ण का कन्यादान, दुर्वासाकृत श्रीकृष्ण स्तव १११५

११३. पार्वती के उपदेश से दुर्वासा का कैलास से द्वारका आना, संक्षेप में महाभारत का वर्णन, श्रीकृष्ण द्वारा जरासंध तथा शाल्ववध, शिशुपाल तथा दन्तवक्त्र वध, देवकी को मृतपुत्र को प्रदान करना, पारिजातहरण तथा सत्य- भामा का पुण्यक व्रतानुष्ठान ११२३

११४. ऊषा-अनिरुद्ध का स्वप्न में समागम, चित्रलेखा का द्वारका से अनिरुद्ध का हरण, ऊषा तथा अनिरुद्ध का गान्धर्व विवाह ११३०

११५. रक्षकों से ऊषा का यह प्रेमप्रसंग सुनकर बाणासुर का क्रोधित होना, महादेव द्वारा हितजनक उपदेश किया जाना, तथापि बाणासुर की युद्धयात्रा, बाणासुर-अनिरुद्ध संवाद ११४०

११६. अनिरुद्ध द्वारा द्रौपदी के पांच पति होने के कारण का वर्णन, रतिहरण वृत्तान्त, अनिरुद्ध से बाणासुर की पराजय ११५३

११७. महादेव द्वारा गणेश से अनिरुद्ध के पराक्रम का वर्णन ११५९

११८. दूत द्वारा श्रीकृष्ण का आगमन सुनकर शिव-पार्वती का वार्त्तालाप तथा मन्त्रणा करना ११६१

११९. बाण की सभा में बलिराज का आना, शिव-बलि संवाद, महादेव द्वारा वैष्णव प्रशंसा, श्रीहरि-बलि संवाद, बलिराज कृत श्रीकृष्ण स्तव, बलि को श्रीकृष्ण द्वारा अभयदान प्रदान करना ११६६

१२०. यादव सैन्य से असुरसैन्य का युद्ध, वैष्णव ज्वरोत्पत्ति, श्रीकृष्ण द्वारा बाणासुर की पराजय ११७४

१२१. शृगालोपाख्यान ११८३

१२२. स्यमन्तक मणि का प्रसंग वर्णन ११९०

१२३. सिद्धाश्रम में राधा द्वारा गणेश पूजा वर्णन ११९३

अध्याय पृष्ठाङ्क

१२४. राधिका से गणेश का प्रशंसा कथन, पार्वती द्वारा वर प्राप्त करना, पार्वती की आज्ञा से सखियों द्वारा राधा की वेष- सज्जा किया जाना, राधा के पास देवगण का आगमन, ब्रह्माकृत राधिका स्तव १२००

१२५. महादेव द्वारा वसुदेव को उपदेश, वसुदेव द्वारा राजसूय यज्ञानुष्ठान १२१२

१२६. राधाकृष्ण का पुनर्मिलन, राधाकृत् कृष्णस्तव, श्रीकृष्ण से राधिका का प्रश्न, कृष्ण द्वारा राधा को ज्ञानोपदेश १२१८

१२७. राधाकृष्ण का विहार तथा यशोदा का आनन्दित होना १२३०

१२८. नन्दराज को श्रीकृष्ण द्वारा युगधर्मोपदेश, गोकुलवासियों के साथ राधा का गोलोकगमन १२३५

१२९. भाण्डीर वन में आये ब्रह्मा आदि द्वारा श्रीकृष्ण स्तोत्र का कथन, यदुकुलध्वंस, पाण्डवों का स्वर्गगमन, भागीरथी को भगवान् का वर प्रदान तथा श्रीकृष्ण का गोलोकगमन १२४०

१३०. देवर्षि नारद का बदरिकाश्रम से ब्रह्मलोक गमन, नारद का विवाह तथा पत्नी के साथ विहार, सनत्कुमार के उपदेश से नारद का तपस्यार्थ जाना, नारद को महादेव का उपदेश, नारद की मुक्ति १२५२

१३१. अग्नि का सुवर्ण की उतपत्ति का वर्णन १२५९

१३२. ब्रह्मादि चार शब्दों का अर्थ वर्णन, कथा का संक्षेप १२६३

१३३. महापुराण-उपपुराण लक्षण वर्णन, सभी महापुराणों की श्लोक संख्या, सभी उपपुराणों का नाम वर्णन, ब्रह्मवैवर्त्त नाम का तात्पर्य, इस पुराण का माहात्म्य कथन, यथाक्रम श्रवण का फलकथन १२७१

❖❖❖